शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 9
Issue 2
15 July, 2018

साहित्य सिद्धान्त एवं विखण्डनवाद

बीज शब्द :

देरिदा, विखण्डनवाद, साहित्य सिद्धान्त, काव्य शास्त्र, नित्से और हार्डडेगर, भाषा सिद्धान्त।

आधुनिक विचारक देरीदा प्रवर्तित 'विखण्डवनवाद' साहित्य सिद्धान्त का नवीनतम आयाम है। देरीदा मूलत: भाषा-वैज्ञानिक हैं, उनके विचारों के केन्द्र में भाषा है। इन्होंने किसी पाठ की अंतर्पाठीयता को केन्द्र में रखते हुए आलोचना की भाषा को साहित्य सृजन की भाषा के समांतर स्थापित करते हुए पुर्नसृजन माना।

प्रस्तुत शोध आलेख में विखण्डवनवाद के आयामों की संक्षिप्त गवेषणा की गई है।

*****

डॉ० रामशंकर कठेरिया
डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा।

साहित्य सिद्धान्त एवं विखण्डनवाद

विखण्डनवाद पश्चिम की साहित्य समीक्षा प्रणाली का नवीनतम आयाम है। उत्तर आधुनिक विचारक जॉक देरिदा (Jacqued Darrida) इसके प्रवर्तक हैं। देरिदा फ्रांस के प्रख्यात दार्शनिक, भाषाविद, आलोचक एवं विचारक हैं। सन् 1930 ई. में अल्जीरिया के एक यहूदी परिवार में देरिदा का जन्म हुआ था और पेरिस के निकोले नोरमले नामक प्रतिष्ठित संस्था में उच्च शिक्षा प्राप्त की। सन् 1965 ई. में इनके दो लिखित निबंधों 'क्रिटिक (Critique)' एवं 'ग्रामेटोलोजी' (Gramatology) से इन्हें विचारक रूप की प्रतिष्ठा मिली। देरिदा मूलत: एक भाषावैज्ञानिक हैं और उनके विचारों की केन्द्र भाषा है। सोस्यूर के भाषा संबंधी चिन्तन ने देरिदा को भीतर तक प्रभावित किया है। वस्तुत: सभी उत्तरसंरचनावादी विचारकों पर सोस्यूर का प्रभाव लक्षित किया जा सकता है। देरिदा उत्तर-संचनावादी हैं, इसीलिए इन्हें उत्तर-आधुनिकतावादी भी कहा जा सकता है। हालांकि देरिदा ने अपने उत्तर-संरचनावादी होने को अस्वीकार किया है, पर विखण्डन (Deconstruction) और भेद (Difference) पर उनकी जो मान्यतायें हैं, उससे वे स्वत: उत्तरसंरचनावादी सिद्ध हो जाते हैं।

देरिदा उच्चकोटि के भाषाविद् हैं। भारत में देरिदा का प्रवास 1997 में रहा है। देरिदा ने तेईस जनवरी सन् 1997 को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के प्रांगण में तथा कलकत्ता में अपना महत्वपूर्ण भाषण दिया था। इसी के साथ इस देश में भी विखण्डनवाद की महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज हुई है। 'विखण्डनवाद' देरिदा की महत्वपूर्ण दार्शनिक अवधारणा है। 'विखण्डनवाद' की इस अवधारणा ने धीरे-धीरे साहित्य कला, शिक्षा मनोविश्लेषण, सामाजिक विज्ञान आदि ज्ञान की शाखाओं में अपनी पैठ बना ली हैं। विभिन्न आलोचक 'विखण्डन' का संबंध देरिदा से पूर्व नित्से और हार्डडेगर से जोड़ते हैं। देरिदा ने ही इसे विविधत दार्शनिक आधार पर सिद्धान्त रूप में प्रतिष्ठित किया। देरिदा के आगे डिलिसमिलर पाल डी. मन हार्डमैन आदि विद्वानों ने 'विखण्डनवादी' विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्तमान में विखण्डनवाद के बारे में दो प्रकार के विचार करने वाले विद्वान हैं। प्रथम प्रकार के विद्वान इसे क्रन्तिकारी विचार मानते हुए इसकी जोरदार वकालत करते हैं तो दूसरे मत के विद्वान इस विचार को निरर्थक और आंतकवादी तक कहते हैं।

देरिदा के 'विखण्डन' की अवधारणा दर्शन की तत्वमीमांसा (Metaphysics) की विरोधी है। देरिदा तत्वमीमांसा का विखण्डन करते हैं। यह विखण्डन की अवधारणा 'भेद' (Difference) पर आधारित हैं। इस भेद शब्द का पहला अर्थ है 'मतभेद' (Figgrt) होना, दूसरा अर्थ है स्थगित (Defer) करना। इस प्रकार विखण्डनवाद की रणनीति भेद की रणनीति है अर्थात् मतभेद होना या स्थगित करने की रणनीति। इसका उद्देश्य है उलट देना या बर्खास्त करना। सामान्य शब्दों में विखण्डन से तात्पर्य किसी मूल पाठ (Text) को उलट देने या स्थगित कर देनो से है। 'भेद' की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर उन्होंने पोस्टकार्ड भेजने का उदाहरण दिया। पोस्ट-बॉक्स में कोई पत्र डालने के दूसरे-तीसरे दिन बाद यह अपने गंतव्य तक पहुँचता है। प्रतीक्षा के इस तीन दिन कि समय में वस्तुत: पत्र पोस्टबाक्स में डालने या प्राप्त करने का भेद या अंतर है। देरिदा का भेद के बारे में यह कथन है कि विखण्डन की आज जो स्थिति है वह एक मध्यवर्ती स्थिति है, अन्तिम स्थिति नहीं। जो भी हो, जॉक देरिदा यहाँ भेद को स्पष्ट करने में असमथ रहे। भेद की अवधारणा में वे 'स्वरूप' को महत्वपूर्ण मानते है; भेद का अर्थ वे तत्वमीमांसा से जोड़ते हैं।

इसमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। भाषा एक शक्तिशाली माध्यम है। देरिदा कहते हैं कि मनुष्य के 'स्व' (self) की पहचान समाज से होती है जैसा समाज होता है वैसे ही 'स्व' की चेतना होती है। इस चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। इस भाषा के कारण ही व्यक्ति अपनी 'चेतना' (self) को पहचानता है। भाषा का संबंध पाठ (Text) से होता है। किसी विषय का महत्वपूर्ण विवरण पाठ (Text) है किसी पाठ में कुछ अर्थ स्पष्ट (Explicit) होता है और कुछ अर्थ अस्पष्ट (Implicit)। विखण्डन का तात्पर्य है उस मूल पाठ को उसके निर्देश, संकेत, अनिश्चितता आदि के पूरे संदर्भ में पढ़ना और स्पष्ट तथा उतरने पर उसे पूरी तरह से अस्वीकार करना ही विखण्डन है। इसके आगे देरिदा कहते हैं कि अस्पष्ट का विखण्डन करने कि लिए दूसरे मूल पाठों के साथ इस मूल पाठ का संबंध देखना चाहिए। इससे हमें यह पता लग जायेगा कि मूल पाठ किस तरह अस्पष्ट पाठ को महत्वहीन करता है।

साहित्यिक आलोचना में विखण्डनवाद साहित्य के मूलपाठ या अनुच्छेद का केवल एक निश्चित अर्थ नहीं होता है। किसी पाठ के विखण्डनवादी सिद्धान्त के केन्द्र में दो सिद्धान्त पाये जाते हैं- पहला विचार यह है कि कोई भी मूलपाठ कभी-भी एक विश्वसनीय पाठ नहीं होता। दूसरा यह कि लेखक जिसने मूलपाठ को लिखा था, वह संस्कृति की अवैयक्तिक शक्तियों जैसे- भाषा और उसकी अचेत विचारधाराओं की तुलना में विषयवस्तु की

सामग्री के लिए कम उत्तरदायी होता है।

देरिदा भाषा के लिखित रूप को लेखाचित्र कहते हैं। भाषा का लेखनस्वरूप स्मरण में सहयोगी है। देरिदा की दृष्टि में भाषा का लिखित रूप वाणी (Speech) की तुलना में गौण है और वाणी (Speech) अधिक महत्वपूर्ण है, यह धारण गलत है। देरिदा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Gramatology' में उन भाषावैज्ञानिकों, दार्शनिकों और तत्वशास्त्रियों को अस्वीकार किया है जो वाक् को अधिक महत्व देते हुए भाषा के लिखित स्वरूप को दोयम दर्जे को और उसकी सत्यता को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं, यद्यपि यह उनके लेखन में अवधारणा के रूप में प्रकट नहीं होता है। प्रख्यात भाषाविद् सास्यूर ने अपने संरचानावाद में भाषा को 'अर्थ का भेदक संजाल' (Differential Network) कहते हुए यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि भाषा 'भेद की व्यवस्था' पर और व्याकरण पर आधारित है। सास्यूर ने कहा कि व्यंजक(शब्द) और व्यंग्य(अर्थ) के बीच एक-बराबर-एक का संबंध नहीं है। शब्द और अर्थ ऐसी लीला में सक्रिय रहते हैं जहाँ ध्वनिभेद से अर्थ की प्राप्ति होती है। सस्यूर ने बताया कि भाषा का विज्ञान होता है। क्योंकि भाषा में संरचानात्मक संबंध होते हैं। देरिदा ने सास्यूर की इस अवधारणा का विखण्डन किया कि भाषा में बोले गये अर्थात् वाचिक शब्द प्राथमिक हैं और लिखित शब्द गौण।

सोस्यूर के अनुसार भाषा का वाचक ही अपनी वाणी का निर्माता है और अर्थ की उसी पर निर्भरता है। देरिदा ने सोस्यूर की इस मान्यता को अपदस्थ करते हुए 'वाक्' और 'लेखन' के बीच के तनाव को ढूँढ़ निकाला। ''देरिदा यही बताते हैं कि प्लेटो, अरस्तू और हीगेल यही मानते हैं कि वाक् प्राथमिक है, प्राकृतिक हैं और स्वाभाविक है। इसलिए इनकी नजर में हर चीज संदेहास्पद है जो लिखित है। देरिदा इसी अवधारणा का विखण डन करते हैं और बताते हैं कि जिसे वाक् कहा जा रहा है उसमें भी ध्वनि के अलावा विराम चिह्न, अन्वय चिह्न होते हैं जो सिद्ध करते हैं कि वाक् में भी लिखित रहता है। 'कहना-सुनना' हीगेल का यही संचार, आदर्श संचार है। लेकिन देरिदा 'कहने में' निहित विराम चिह्नों को देखते हैं और 'सुनने में' उन ध्वनियों को 'सुने गये के आलावा सुनी जाती है'। हीगेल इन्हीं ध्वनियों को अपने दर्शन बनाते हैं। विखण्डन इन्हीं दबा दी गयी कही-सुनी ध्वनियों का पकड़ना है।''[1] इस प्रकार देरिदा ने वाक् के समक्ष लेखन की महत्ता का प्रतिपादन किया और साहित्य को उसे उचित स्थान पर प्रतिष्ठित रकते हुए दर्शन से ऊपर की मान्यता प्रदान की। अब तक दर्शन के मुकाबले साहित्य की मान्यता द्वितीयक रही है। देरिदा ने अपने विखण्डन के सिद्धान्त से यह सिद्ध किया कि साहित्य दर्शन है और सोचने का एक तरीका है।

''देरिदा यही बताते हैं कि दर्शन हमेशा अलंकारी भाषा, मुख्यत: रूपक की भाषा पर निर्भर रहा है, उन्हीं पर जीवित रहा है। रूपक से ही शुद्ध तर्क को रूप दिया है दर्शन ने। बिना रूपक के, पूर्व स्थिति सत्य को दार्शनिक नहीं पाते पाते हैं। दर्शनों में ऐसा रूपक हमेशा रहा है जो इन्हे टिकाऊ बनाता है। खास कर वे रूप जो सत्य और सत्य के तर्क को बनाते हैं। यही ये 'ट्रोप्स' है, गाँठ हैं जो दर्शनों में मिलती है। दर्शन स्वयं ही तर्क के रास्ते रूपक में फँसे नजर आते हैं।..... देरिदा के विखण्डन की विशेषता ये नहीं है कि दर्शन में उन्होंने नई व्याख्या पद्धति दी है।' उन्होंने सिर्फ नई व्याख्या या अनेकार्थवादी व्याख्यामात्र नहीं दी है। दरअसल उन्होंने दर्शन के धोखे को बताया है। यही उनके विखण्डन की खाशियत है।''[2] इस प्रकार देरिदा ने दर्शन और साहित्य को एक पृष्ठभूमि पर खड़ा किया और दर्शन और साहित्य को एक दूसरे के सामांतर सिद्ध किया। देरिदा के पूर्व पाल वेलरी ने दर्शन को ही साहित्य की एक शाखा कहते हुए बताया था कि दार्शनिक अपने सत्यों के लिए संदर्भों का ही सहारा लेते हैं उनके अनुसार दर्शन का अध्ययन साहित्य के रूप मे किया जा सकता है या अधिक-से-अधिक दर्शन एक साहित्यिक विधा हो सकती है। देरिदा ने वेलरी के तर्क को ही अपना साधन बनाते हुए उसका विखण्डन कर दिया। उन्होंने कहा कि दर्शन और साहित्य को एक दूसरे से ऊँचा-नीचा कर देने से कुछ नहीं हो जाता। देरिदा कहते हैं कि 'विखण्डन' पाठ में उपस्थित 'बोध' और 'तर्क' के पार्थक्या को सदैव ध्यान में रखता हैं।, जो एक पाठ में दूसरे से अलग होता है। इसलिए प्रत्येक पाठ का विखण्डन अलग तरीके से ही हो सकता है। हर पाठ का उपना संजाल होता है और वे एक दूसरे से समरूप हो सकते हैं। देरिदा इसे Dissamination कहते हैं, जो भाषा में सदैव घटित होता है और जहाँ एक पाठ से संवाद करती रहती है। देरिदा के अनुसार ऐसा कोई पाठ नहीं है जिसे दर्शन या साहित्य में से किसी एक में बंद को जाये या अपने से बाहर के प्रभाव से निरपेक्ष हो जाये। निष्कर्षत: देरिदा अंतर्पाठीयता (Intertextuality) को स्थापित करते हैं। उनके अनुसार लेखन सतत् अन्तर्पाठीय क्रिया है जो सदैव चलती रहती है। उसमें भी देरिदा पाठों के घालमेल से सचेत करते हुए, 'विवेकसम्मत, धीमी

1. देरिदा का विखण्डन और साहित्य, सुधीश पचौरी पृ0, 30।

2. देरिदा का विखण्डन और साहित्य, सुधीश पचौरी पृ0, 30।

और भेदपूर्ण' अन्तर्पाठीयता की स्थिति को स्वीकार करते हैं।

विखण्डनवाद के पूर्व आलोचना साहित्य सृजन की तुलना में गौण मानी जाती रही है। विखण्डन ने यह स्थापित किया कि समीक्षा कर्म, सृजनात्मक लेखन पर आश्रित हो हुए भी उसकी गुलाम नहीं है अपितु पुनर्सृजन है। ''विखण्डन मानता है कि आलोचना लेखन का एक तरीका है। जो किसी जीज में से किसी चीज को खोजता नहीं बल्कि उस टैक्स्ट में अर्थ का निर्माण करता है जिससे वह संलग्न होती है। इसिलिए वह रचना की तरह रचनात्मक है। जिस तरह रचना टेक्स्ट में 'अर्थ का निर्माण' करती है, उसी तरह आलोचना टेक्स्ट में 'अर्थ का निर्माण' करती है। इसलिए रचना और आलोचना 'अर्थ निर्माण' के दो तरीके' है। बड़े-छोटे नहीं।''[3] इस प्रकार देरिदा ने समीक्षा कर्म को रचनाकर्म के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करते हुए समीक्षाकर्म को दोयम दर्जा मानने वाली दृष्टि का विखण्डन किया। परंपरा से चली आ रहीं 'रचनात्मक भाषा' और 'आलोचनात्मक भाषा' के भेद को विखण्डन न समाप्त कर दिया। फलत: साहित्य में 'काव्य' के श्रेष्ठता की अवधारणा स्वत: विखण्डित हो गई।

देरिदा की एक महत्वपूर्ण स्थापना है कि 'टैक्स्ट से बाहर कुछ भी नहीं है' देरिदा पाठ में किसी बाह्य प्रभाव के हस्तक्षेप को अस्वीकार करते हैं। देरिदा का विखण्डन किसी अन्तिम शब्द का बयान नहीं करता है। वह एक पाठ के अर्थ अस्थिरता को मानता है, अर्थ के लगातार स्थगन को मान्यता देता है। विखण्डन के तीन बीज शब्द हैं[4]- भिन्नता (Difference), निशान (Trace) और आद्यलेखन (Arc Writing)। इनमें पहले दो का संबंध भाषिक संरचाना से है और तीसरे का संबंध अनकहे के अन्वेषण से है। भिन्नता का अर्थ चिह्न की दो क्रियाओं से है- भिन्नता और विलंबन या स्थगन। भिन्नता का अभिप्राय है विशिष्टता से है अर्थात् जो है वह मान्य नहीं है उदाहरणार्थ 'पंक' और 'पंकज' दो ऐसे शब्द हैं जो अपने आप में विशिष्ट है, जो एक है वह दूसरा नहीं है, जो दूसरा है वह पहला नहीं है। 'विलंबन' का तात्पर्य उससे है जो पाठ में नहीं है या स्थगित है। विखण्डन से तात्पर्य मूल पाठ (Text) आलोचनात्मक अध्ययन है। देरिदा के अनुसार, मूल पाठ में जहाँ भी सत्य की उपस्थिति को मानकर चला जाता है, उसे अस्वीकार करना चाहिए। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि देरिदा सत्य के विरोधी हैं। वे इस तथाकथित सत्य के विरोधी हैं। जो वस्तुत: सत्य नहीं होता है। मूल पाठ के सत्य को लोग गहरी छानबीन नहीं करते हैं। लोग सतही तौर पर ही उसे सत्य मान लेते हैं। विखण्डनवाद इसका विरोध करता है। देरिदा के अनुसार मूलपाठ का केवल एक ही अर्थ नहीं मूल पाठ का जो अर्थ लेखक निकालता है, पाठक के हाथों में आकर उसका वही अर्थ नहीं होता, बल्कि बदल जाता है। देरिदा की मान्यता है कि जो कुछ लिखा जाता है उसमें वस्तुनिष्ठ अर्थ का अभाव होता है। भाषा में एक ही शब्द कि कई अर्थ होते है और एक ही अर्थ के लिए कई पर्यायवाची शब्द होते हैं। इसमें प्रत्येक शब्द का अपना अलग-अलग संदर्भ होता है इसलिए शब्दों का अर्थ हमें उनके संदर्भ में खोजना चाहिए। स्पष्टत: मूल पाठ का अर्थ वस्तुनिष्ठ अर्थ को जानना होना चाहिए। भाषा और शब्दों के पीछे जो स्पष्ट अर्थ हैं, उसे निकालना चहिए।

अंतत: देरिदा का विखण्डनवाद मानता है कि पाठ (Text) के बाहर कुछ भी नहीं है। पाठ का अर्थ उसके पाठ की रणनीति में बनता है। देरिदा की दृष्टि में विखण्डन एक निरंतर प्रक्रिया है, पठन की गतिविधि है, यह पद्धति या अवधारण नहीं है बल्कि एक रणनीति है, एक कार्यवाही है, काई सूत्रबद्ध सिद्धान्त का फार्मूला नहीं है जहाँ प्रत्येक प्रश्न का अंतिम उत्तर पहले से मौजूद हो। देरिदा के अनुसार, अर्थ कृतिकार का नहीं होता है, न ही उसके पास होता है, बल्कि पाठकर्ता के पास होता है। हर पाठ का कुपाठ होता है। इसलिए अनंतिम होता है। पाठ का अनंतिम होना नव्य समीक्ष का अंत करता है। विखण्डन एक ऐसी प्रक्रिया है जो सदैव निष्कर्षवादी तकनीक के विरुद्ध है। अत: विखण्डन विमर्श (Discourse) को जन्म देता है।

◆◆◆

प्रकाशन शोध प्रक्रिया का अंतिम और अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शोध समाज की मूल्यवान उपलब्धि है। इसे समाज के बीच आना ही चाहिए जिससे समस्त मानवता लाभ उठा सके। प्रकाशन के सीमित अवसर शोध को संकुचित करते हैं।

3. देरिदा का विखण्डन और साहित्य, सुधीश पचौरी पृ0, 31।
4. द्रष्टव्य, हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, बच्चन सिंह, पृ0 103।